2 ईदगाह

प्रेमचंद रचित यह कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। यह कहानी वंचित बचपन के परिस्थितियों पर मार्मिक ढंग से टिप्पणी करती है। अभावग्रस्त जीवन बाल मन को वयस्क की तरह सोचने के लिए मजबूर करता है। हामिद खिलौने की जगह अपनी दादी के लिए चिमटा खरीद कर लाता है और दादी अमीना के लिए यह दृश्य गहरी संवेदना की अभिव्यक्ति का कारण बनता है। दादी को लगता है, काश ! इस बच्चे को भी वह सब कुछ मिलता, जो पड़ोस के बच्चे को मिलता है।

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। उनकी जेबों में कुबेर का धन जो भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना ख़ज़ाना निकालकर गिनते हैं और ख़ुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद के पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। इनसे तो अनगिनत चीज़ें खरीद सकते हैं खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या । और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का ग़रीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट चढ़ गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं! इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही थी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है "तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।"

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद को कैसे अकेले मेले में जाने दे। कहीं खो जाए तो क्या होगा ? नन्ही-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे! पैर में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद ले लेगी; लेकिन यहाँ सिवइयाँ कौन पकाएगा? धोबिन, नाइन, मेहतरानी और चूड़िहारिन सभी तो आएँगी। सभी को सिवइयाँ चाहिए। साल भर का त्योहार है।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। उसके पैरों को तो जैसे पर लग गए हैं। कभी-कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशाना लगाता है। माली अंदर से गाली देता हुआ निकलता है। लड़के खूब हँस रहे हैं।

ईदगाह आ गई। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया। नीचे पक्का फर्श है। रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक दूर तक चली गई हैं। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके-सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ घुटनों के बल बैठे जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ।

नमाज़ खत्म हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौनों की दुकानों पर धावा होता है। तरह-तरह के खिलौने हैं सिपाही, गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती, धोबिन और साधु। महमूद सिपाही लेता है, ख़ाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर पर मशक रखे। नूर को वकील से प्रेम है। काला चोंगा, नीचे सफ़ेद अचकन, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? कहीं हाथ से छूट गया, तो चूर-चूर हो जाएगा, पानी पड़ा तो सारा रंग धुल जाएगा। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा?

सब अपने-अपने खिलौनों की तारीफ कर रहे हैं। हामिद ललचाई आँखों से खिलौनों को देख रहा है। चाहता है कि ज़रा देर के लिए ही सही, वह उन्हें हाथ में ले सकता। वह हाथ आगे बढ़ाता है लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचाता रह जाता है।

मिठाइयों की दुकानें आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब जामुन, किसी ने सोहन हलवा। मजे से खा रहे हैं। लेकिन हामिद! अभागे के पास सिर्फ तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता?

मोहसिन उसकी ललचाई नजरें देखकर कहता है ''हामिद, रेवड़ी ले खा, कितनी खुशबूदार है।'' जैसे ही हामिद हाथ फैलाता है, मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे, और सम्मी ख़ूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मिठाई की दुकानों के बाद लोहे की चीज़ों की दुकानें हैं। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख़याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वे कितनी प्रसन्न होंगी? फिर उनकी

उँगलियाँ कभी नहीं जलेंगी। खिलौने से क्या फ़ायदा! व्यर्थ में पैसे ख़राब होते हैं।

अम्मा चिमटा देखते ही कहेंगी 'मेरा बच्चा अम्मा के लिए चिमटा लाया है।' हज़ारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन दुआएँ देगा। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं।

दुकानदार से बड़ी मुश्किल से मोलभाव करके हामिद ने चिमटा तीन पैसों में ले लिया। उसे कंधे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ साथियों के पास आया। मोहसिन ने हँसकर कहा "यह चिमटा क्यों लाया पगले? इससे क्या करेगा?" महमूद बोला, "चिमटा कोई खिलौना है?"

हामिद बोला, "क्यों नहीं? अभी कंधे पर रखा तो बंदूक हो गई। हाथ में लिया फ़कीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो मंजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम सबके सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है चिमटा।"

सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला "मेरी खंजरी से बदलोगे?"

हामिद ने खंजरी की ओर उपेक्षा से देखा "मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खंजरी का पेट फाड़ डाले।" चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया। औरों ने तीन-तीन, चार-चार पैसे ख़र्च किए, पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया।

सबने अपने-अपने खिलौने देकर चिमटा पकड़ने का प्रस्ताव रखा। हामिद मान गया। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने ख़ूबसूरत खिलौने हैं। पर उसका चिमटा तो रुस्तमे हिंद है सभी खिलौनों का बादशाह।

गाँव पहुँचकर बच्चों ने अपने-अपने खिलौने से खेला, पर थे तो वे मिट्‌टी के। कुछ ही देर में टूट-फूट गए। अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी। गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी! "यह चिमटा कहाँ से लाया?"

"मैंने मोल लिया है।" "कै पैसे में?" "तीन पैसे दिए।"

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है, न कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा। "सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?"

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, "तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।" बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। यह स्नेह मूक था, ख़ूब ठोस,

रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्‌भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर कितना ललचाया होगा मन! इतना ज़ब्त इससे हुआ कैसे! वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्‌गद्‌ हो गया।

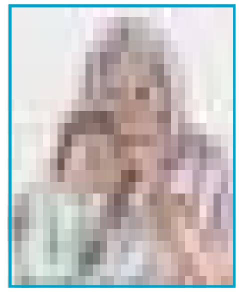

अमीना की आँखें भर आईं। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता।

प्रेमचंद

शब्दार्थ

अभागिन	–	भाग्यहीन स्त्री
गत	–	पिछला
दिल कचोटना	–	अफसोस होना, मन में कसक होना, घबराना
ईदगाह	–	वह स्थान जहाँ ईद के दिन नमाज़ पढ़ी जाती है
सिजदे	–	सम्मान में सर झुकाना
निगाह	–	दृष्टि, नज़र
प्रदीप्त	–	जला हुआ
मशक	–	पशु की खाल से बना थैला
भिश्ती	–	मशक से पानी भरने वाला
पोथा	–	मोटी किताब, कॉपी
उपेक्षा	–	नज़रअंदाज
विवेक		भले-बुरे का ज्ञान, समझ
ज़ब्त	–	दबाया हुआ
गद्‌गद्‌	–	अत्यन्त प्रसन्न
दामन	–	आँचल
ठोस	–	मज़बूत

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. ईद के दिन अमीना क्यों उदास थी ?
2. हामिद मिठाई या खिलौने के बदले चिमटे का चयन करता है। क्यों ?
3. मेला जाने से पहले हामिद दादी से क्या कहता है ?
4. मेले में चिमटा खरीदने से पहले हामिद के मन में कौन-कौन से विचार आये ? वर्णन कीजिए।
5. हामिद ने चिमटे को किन-किन रूपों में उपयोग करने की बात कही है ?
6. ईदगाह कहानी आपको कैसी लगती है? इसकी मुख्य विशेषताएँ बताइए ।
7. चिमटा देखकर अमीना के मन में कैसा भाव जगा ?

8. **निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और उसके आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए**

नमाज़ खत्म हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धावा होता है। तरह-तरह के खिलौने हैं सिपाही, गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती, धोबिन और साधु। महमूद सिपाही लेता है, ख़ाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर पर मशक रखे। नूरे को वकील से प्रेम है। काला चोंगा, नीचे सफेद अचकन, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले ? कहीं हाथ से छूट गया, तो चूर-चूर हो जाएगा, पानी पड़ा तो सारा रंग धुल जाएगा। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा ?

(क) नमाज़ खत्म होने के बाद लोग क्या कर रहे थे ?

(ख) दुकानों में किस-किस तरह के खिलौने थे ?

(ग) वे खिलौने किस चीज के बने थे ?

(घ) महमूद, मोहसिन और नूरे ने कौन-कौन से खिलौने खरीदे ?

(ङ) परिच्छेद में सिपाही, भिश्ती और वकील के हुलिये का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार आप राजा और साधु के हुलिये का वर्णन कीजिए।

(च) अनुच्छेद में आए विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखिए।

(छ) 'वर्दी' और 'पोथा' के समानार्थी लिखिए।

पाठ से आगे

1. महमूद, मोहसिन, नूर और हामिद में किसका चरित्र अच्छा लगा? कारण बताइए।
2. क्या हामिद बच्चों की सामान्य छवि से अलग हटकर एक नयी छवि प्रस्तुत करता है? कैसे?
3. "चुनौती बच्चे को परिपक्व बना देती है।" इस उक्ति की व्याख्या कीजिए।
4. 'त्योहार हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं।' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

व्याकरण

वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(क) रंग जमाना

(ख) गद्गद् होना

(ग) भेंट चढ़ना

(घ) बाल बाँका न होना

(ङ) पैरों में पर लगना

(च) कुबेर का धन मिल जाना।

गतिविधि

1. मेले में आपने क्या-क्या देखा, उसका चित्र बनाइए।
2. अपने शिक्षक से रमज़ान के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. ईद और मुहर्रम में क्या अंतर है ? अपने शिक्षक से समझिए।
4. **आपके अनुसार निम्न परिस्थितियों में हामिद क्या करता?**

-- यदि उसके पास बारह पैसे होते।

-- यदि उसके पास पंद्रह पैसे होते।

-- यदि उसके साथ उसके पिता होते।